



खीस का महत्व

रोहिताश कुमार* और टीकम गोयल*

भारतीय अर्थव्यवस्था में पशुपालन का बड़ा ही महत्वपूर्ण स्थान रहा है। खासकर ग्रामीण किसानों की आय का प्रमुख स्रोत पशुपालन ही है। पशुओं से प्रोटीन का स्रोत दूध तथा इससे बने उत्पाद, मांस से बनी वस्तुएं तथा चमड़े से बनी उपयोगी चीजों इत्यादि की प्राप्ति होती है। ये आम जनमानस के लिए अत्यंत ही उपयोगी होते हैं। पशुओं की नयी पीढ़ी उनके बछड़ों से तैयार होती है, परन्तु यदि इन नवजात बछड़ों-बछड़ियों की उचित देखभाल न की जाये, तो इनकी मृत्युदर में वृद्धि हो सकती है। इससे किसान को आर्थिक तौर पर तथा पशुधन दोनों की भारी हानि हो सकती है।

पशुपालक, निम्न बातों को ध्यान में रखकर नवजात बछड़े-बछड़ियों को पशुधन की हानि से बचा सकते हैं:

जन्म के समय बछड़े-बछड़ी एवं मेमने की देखभाल

- जन्म का समय नजदीक आने पर मादा गर्भित पशु का विशेष ध्यान रखना चाहिए। कभी-कभी सामान्य जन्म होने में समस्या हो जाती है और इसमें नवजात शावक की मृत्यु की आशंका होती है।
- जन्म लेने में बाधा से निपटने के लिए यदि मादा पशु बार-बार जोर लगाने के बावजूद एक घंटे से अधिक का समय ले, तो तत्काल किसी पंजीकृत पशुचिकित्सक की मदद लेकर इस समस्या से बचा जा सकता है। इसमें मादा पशु और शिशु बिना किसी हानि के सुरक्षित हो जायेंगे।

*पशु चिकित्सा एवं पशु प्रसार शिक्षा विभाग, पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानिया, उदयपुर (राजस्थान)

पहले 10 दिनों के बछड़े का संवर्धन

- जन्म के तुरंत बाद बछड़े-बछड़ी का वजन करना आवश्यक होता है। इससे पता लगता है कि भविष्य में उम्र के साथ वृद्धि दर सुचारू हो रही है या नहीं। इसका अंदाजा आसानी से लग जाता है और महत्वपूर्ण उपाय किये जा सकते हैं।
- जन्म के बाद नवजात की नाभि नली को लगभग ऊपर से दो इंच दूर किसी साफ औजार से काटकर उस पर 3-5 प्रतिशत या अधिक सांद्रता वाले टिंचर आयोडीन नामक संक्रमण रोकने की



नवजात मेमने

दवा से साफ करके इसमें 30 सेकेंड तक डुबोकर रखना चाहिए। इससे नाभि के पकने वाले रोगों तथा ज्वर से बचा जा सकता है। इस प्रक्रिया को 12 घंटे के उपरांत दोहराना चाहिए।

- नवजात बछड़ी-बछड़े को जन्म के 2 घंटे के भीतर 2 लीटर खीस तथा 12 घंटे के भीतर 1 से 2 लीटर वजन के अनुसार खीस पिलाना चाहिए। इससे उनकी रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ जाती है।
- मादा पशु तथा शिशु को सामान्य गर्म हवादार तथा स्वच्छ स्थान पर रखना चाहिए और इनके बिछावन के लिए सूखी घास का प्रयोग करना चाहिए तथा समय-समय पर इसे बदलते रहना चाहिए।

खीस

खीस एक गाढ़ा, पीला और मैमेरी ग्लैण्ड का प्रथम स्राव है। यह मादा पशु से प्रजनन के तुरन्त बाद प्राप्त होता है। इसमें सामान्य दूध की तुलना में 4-5 गुना अधिक प्रोटीन और 10-15 गुना अधिक विटामिन 'ए' होता है। इसमें कई प्रतिरक्षी, वृद्धिकारकों और आवश्यक पोषक तत्वों के साथ ट्रिप्सिन जैसे अवरोधक कारक भी होते हैं। ये अवरोधक कारक खीस में उपस्थित एंटीबॉडी को बच्चे की आंत में होने वाले पाचन में रोकते हैं और एंटी बॉडी को बिना विघटित किए सीधे ज्यों का त्यों अवशोषित कर लेते हैं।

- बछड़ा-बछड़ी के रखने के स्थान को रोजाना साफ करना चाहिए तथा वहां निसंक्रामक दवा का छिड़काव करना चाहिए। इससे हानिकारक जीवाणुओं तथा मक्खियों से फैलने वाले रोगों से उन्हें बचाया जा सकता है।
- जन्म के बाद बछड़े-बछड़ी को पेट के कीड़े तथा दस्त, जिसे काफ स्कावर रोग भी बोलते हैं, के होने का संदेह रहता है। इसमें कभी-कभी बछड़े की मृत्यु भी हो जाती है।
- बछड़े-बछड़ी के पेट के कीड़े में मुख्य गोल कृमि नामक कीड़ा पाया जाता है। इससे बचाव के लिए पशुचिकित्सक से परामर्श लेकर पेट के कीड़े की दवा समय-समय पर देते रहना चाहिए।
- प्रथम कृमिनाशक दवा 10 से 14 दिनों

के भीतर देनी चाहिए। इसके बाद शिशु को प्रत्येक महीने में एक बार 6 माह तक कृमिनाशक दवा देनी चाहिए।

एक माह के बछड़े का संवर्धन

बछड़े-बछड़ी के सींग को जड़ से निकलवा देना चाहिए। इससे इसके टूटने, सींग के कैंसर रोग तथा घाव होने का खतरा नहीं रहता है।

2 से 6 माह के बछड़े-बछड़ी का संवर्धन

- सामान्यतः बछड़ी-बछड़ी से 4 से 8 सप्ताह की उम्र में मां का दूध छुड़वा देना चाहिए। इसके पहले यह ध्यान रखना चाहिए कि शिशु स्वस्थ है तथा 0.5 से 0.8 कि.ग्रा. दाना खाने योग्य हो गया हो।
- नियमित अंतराल पर शिशु के वजन की जांच करनी चाहिए और शारीरिक वृद्धि को देखना चाहिए कि सुचारू रूप से है या नहीं।
- पेट के कीड़े की दवा समय-समय पर देनी चाहिए।
- पशुचिकित्सक के परामर्श से बछड़ा-बछड़ी को लंगड़ा बुखार तथा थैलेरिया जैसे घातक और जानलेवा रोगों से बचने के लिए समयानुसार टीके (वैक्सीन) लगवाने चाहिए।
- डेरी उद्योग की सफलता उचित बछड़ा व बछड़ी प्रबंधन पर निर्भर करती है। युवा वंश का उचित प्रबंधन मृत्युदर को कम कर सकता है। इसमें खीस का महत्वपूर्ण योगदान रहता है।

कम दें खीस बछड़े को

जन्म के बाद पहले घंटे के भीतर जितनी जल्दी हो सके बछड़े को पिला देनी चाहिए। नवजात बछड़े की आंतों में उसके जन्म के 24 घंटों तक प्रोटीन के बड़े अणुओं को अवशोषित करने की क्षमता रहती है।

खीस की मात्रा

जन्म के पहले 6 घंटों में लगभग 2.5-3 लीटर या बछड़े के भार के 10 प्रतिशत के बराबर खीस पिला देनी चाहिए।

खीस की गुणवत्ता को प्रभावित करने वाले कारक

- गाय की आयु: प्रायः बूढ़ी गायों में खीस, अधिक मात्रा में अच्छी गुणवत्ता का पाया जाता है। तीन या अधिक ब्यांत वाली गायों में खीस सामान्यतः अच्छी गुणवत्ता की होती है।
- सूखे की अवधि: तीन सप्ताह से

नवजात में होने वाली प्रमुख समस्याएं एवं निदान

- जन्म के समय नवजात शिशु में चोट लगने तथा यदि कठिन ब्यांत हो रहा हो, तो ऑक्सीजन की कमी के कारण श्वसन क्रिया में परेशानी बढ़ सकती है। इस समस्या से निदान पाने के लिए ब्यांत के बाद मादा पशु को उसके शावक को चाटने देना चाहिए तथा उसके नाक तथा मुंह से तरल चिपचिपे पदार्थ को निकाल देना चाहिए और उसके शरीर को रगड़ना चाहिए। इससे उसके शरीर का तापमान कम नहीं होगा तथा उसे श्वसन क्रिया में आसानी होगी।
- सुस्तपन का होना: सामान्यतः बछड़ी-बछड़ा को 9 घंटे के भीतर खड़ा हो जाना चाहिए। यदि बछड़ा खड़े होने में देरी लगाये और दूध पीने में रुचि न दिखाए, तो यह सुस्तपन का संकेत है।
- सुस्तपन के प्रमुख कारणों से हो सकता है, खून में ऑक्सीजन की कमी। इससे पेट में अम्लता बढ़ती है तथा खून में ग्लूकोज की कमी हो सकती है।
- इन सब कारणों के चलते शावक, माता का प्रथम दूध जिसे कोलोस्ट्रम कहते हैं, उचित मात्रा में नहीं पी पाता। इससे रोग प्रतिरोधक क्षमता कारक (इमुनोग्लोबुलिन)। शरीर में नहीं पहुंचता और बछड़े-बछड़ी को रोग होने का खतरा बढ़ जाता है।



- शुरुआत में शावक को मां का दूध थन से पीने देना चाहिए तथा धीरे-धीरे उसे बोतल से दूध पीने की आदत डालनी चाहिए। ऐसा करने से उसे जरूरत के हिसाब से संतुलित मात्रा में दूध पिलाया जा सकता है।
- जन्म के एक घंटे के भीतर कोलोस्ट्रम का पिलाना अत्यंत ही आवश्यक होता है। इससे शावक की रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि होती है और रोग के होने का खतरा टल जाता है।
- बछड़े-बछड़ी के साथ-साथ उसकी मां को थनैला रोग न हो, इसका भी ध्यान देना चाहिए। इस रोग के होने पर दूध की गुणवत्ता प्रभावित होगी, जो बछड़े और जन मानस दोनों के लिए ही हानिकारक है।

कम सूखी अवधि में इम्युनोग्लोबुलिन मैमोरी ग्लेण्ड में इकट्ठा नहीं हो पाता है। इसलिये सूखी अवधि लंबी (3 सप्ताह से अधिक) होने पर बेहतर खीस प्राप्त होती है।

कृत्रिम खीस

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि किसी कारणवश मां, बच्चे ब्याने के बाद खीस देती ही नहीं है या गाय की मृत्यु हो जाती है। ऐसी परिस्थिति में अगर कोई और गाय आसपास में ब्याई हो, तो उसका खीस पिलाया जा सकता है। खीस उपलब्ध नहीं होने पर शिशु

को कृत्रिम खीस (ताजा दूध-500 मि.ली., एक अंडा 55-60 ग्राम, गुनगुना पानी-300 मि.ली. तथा अरंडी का तेल 1-2 चम्मच) घर पर बनाकर पिलाना चाहिए। कृत्रिम खीस दिन में तीन बार पिलाना चाहिए।

इस प्रकार ऊपर बताई गई खीस प्रबंधन विधि को ध्यान में रखकर किसान न केवल युवा वंश (बछड़ा व बछड़ी) की मृत्युदर को कम कर सकते हैं, बल्कि भविष्य में होने वाले आर्थिक नुकसान से भी बच सकते हैं। इस प्रकार एक बेहतर उत्पादन वाला डेरी पशु समूह तैयार कर सकते हैं।